

VIVEKANANDA COLLEGE
THAKURPUKUR
KOLKATA-700063

NAAC ACCREDITED 'A' GRADE

Topic: TEXT PORTION OF RAJBAHANCARITAM (part II)

Course Title: RAJBAHANCARITAM

Paper: CC3

Unit: 2, Section - B

Semester: 2

Name of the Teacher: Abhishek Das

Name of the Department: Sanskrit

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30							

August 2017

3

Thursday

Appointment

अमरेश्वरः अपि सिंहवर्मा सिंह इवासह्यविक्रमः
 अमरेश्वरः + अपि इव + असह्य - विक्रमः
 अमरेश्वरः अमरेश्वरः अमरेश्वरः अमरेश्वरः अमरेश्वरः

प्राकरं शैतुयित्वा महता बलसमुदायेन निर्गम्य
 शरीरं ह्यन करु विमान् अत्रानुलक्षितो अत्र मरिचिष्ठ शय

स्वप्रहितकृतव्रतादुतानां साहाय्यदुनाय -
 स्वप्रहितः स्वप्रहितः स्वप्रहितः स्वप्रहितः स्वप्रहितः

- अतिशतत्वश्मापततां धरापतीनामत्रिकालभाविन्यापि
 अतिशतत्वश्म + आपततां धरापतीनाम् + अत्रिकालभाविनि + अपि
 अतिशतत्वश्म आपततां धरापतीनाम् अत्रिकालभाविनि अपि

सन्निधावदुत्तापैक्षः साक्षाद्विवलेपौ
 सन्निधा + अदुत्तापैक्षः साक्षात् + इव + अवलेपः
 सन्निधा अदुत्तापैक्षः साक्षात् इव अवलेपः

वपुष्मानक्षमापरीतः प्रतिवकां प्रतिजग्राह
 वपुष्मान + अक्षमापरीतः प्रतिवकां प्रतिजग्राह
 वपुष्मान अक्षमापरीतः प्रतिवकां प्रतिजग्राह

(২৫)

August 2017

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri
								1	2	3	4	
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	

ay
Appointment

স্বাস্থ্যকর্মীরাতি গ্রিহসংস্কার ও প্রচলিত বিক্রমে প্রাচীর
 বেদ কাঠ ইত্যাদি অংশ নির্গত হলেন। তিনি নিজে
 যে দুতদের পাঠিয়ে স্বাস্থ্যকর্মীদের জন্য আমন্ত্রণ
 জানিয়েছিলেন, তাঁরা সীমিত সীমিত শ্রম-
 প্রদান করে, তাঁদের জন্য অপেক্ষা না করে,
 বিভিন্ন অসহিষ্ণু শ্রম প্রত্যক্ষ স্মৃতিস্থান
 গঠন হতে প্রতিশ্রুতি করে আশ্রয়ন করলেন।

6
17
18
19
20

~~১~~

6

Sunday

20

August 2017

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
								1	2	3	4	5	
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31		

Appointment

এই মুহূর্তে অংশবাহীৰ অধিকৃত হৈছে বিনষ্ট হৈছে তাল

এক ~~অংশ~~ হেং কৰা ও মতমত অধিকৃত আধাতে

অংশবাহীৰ কৰ্মী ২০, এক হাতি থেকে অন্য এক

হাতিতে লাফ দিয়ে অংশবাহীৰ প্ৰাৰ্থনাত বন্দীমান

চন্দ্রবাহী অংশবাহীকে বন্দী কৰিলে, কিন্তু

অংশবাহীৰ কন্যা অংশবাহীৰ বন্দীকৰণ কৰে

প্ৰতিদ্বন্দ্বিতা হাৰায় এক অংশবাহীৰ প্ৰতি অত্যন্ত

অংশবাহী হাৰায় চন্দ্রবাহী অংশবাহীকে হত্যা কৰিলে

না,



Sept 17	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	
24	25	26	27	28	29	30								

(2)

August 2017

7

Monday

Appointment

अपि त्वनीनयदुपनी तार्शेषशल्यमकल्पसन्धो
 तु + अनीनयात् + अपनीत + अशेषशल्यम + अकल्पसन्धः
 किन्तु (अभ्यासुव) तिस्य कालम् 10
 102 (यत्किं किं कर्मद्रुक्- इति कति करु श्रुवप्रतिष्ठ

वन्धानम, अजीगणाल् गणकसङ्घः अङ्घ्रि
 कावाज्वाह् अजीगणात् + च 11
 कर्मण कर्वालय् किरउअह्व द्वावा अङ्घ्रि + एव
 कर्मण कर्वालय् 12

क्षपावसाने विवाहनीया राजदुहिता इति
 क्षपा + अवसाने विवाह कर्तव्यं शव 13
 कर्तुं विवाह 14
 विवाह कर्तव्यं शव 15
 कर्तुं विवाह 16

कृतकान्तुकमाङ्गलं च तस्मिन्नेकपिप्लुनचलान्
 तस्मिन् + एकपिप्लुनचलान् 15
 विवाह विषयकं द्वावपिप्लुनचलान् 16
 -अप्रांति शवः परं 17
 अत्र चतुर्वर्गं 18
 कैलासपर्वत (यत्किं 19

प्रतिनिवृत्त्यैणजङ्घो नाम जङ्घाकारिकः
 प्रतिनिवृत्त्यै + एणजङ्घः 18
 अङ्गणत् 19
 एनअङ्घ्रि नाम 20

प्रभवतो दुर्पसारस्य प्रतिसन्देशमावेदयत् 4
 प्रतिसन्देशम् + आवेदयत् 20
 आर्षम् 21
 मर्षावत् 22
 अङ्गुव 23
 क्षावालय 24

8

August 2017

(22)

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
								1	2	3	4	5	
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31		

Tuesday

Appointment

৯ পক্ষানুপে দেহ থেকে বিদ্যুৎ বর্ষাযুগে উৎসর্গিত
 ১০ করে ~~কিছু~~ অংশকে অধিবৃত্তি চন্দ্রমা
 ১১ কৰাণাৰে পাঠিয়ে দিলেন। সেই দিনেই দৈবউদেৰ
 ১২ দ্বারা সর্মা কৰালেন যে, আজই বাত্রিবেশে
 ১৩ বাজকেন্দ্রা অস্থানিকে বিবাহ করতে হবে।
 ১৪ বিবাহ বিষয়ক স্থানিক অনুষ্ঠান ^{প্রায়} শেষ হবার পরে
 ১৫ এনজেল নামে এক দূত কৈলাস পর্বত থেকে যিহে
 ১৬ এসে প্রুত দর্শনাবের প্রত্যুত্তর নিবেদন কৰালেন।

১৭ কৃতকৌতুকস্থানে - হ্রুবন্থন অর্থে 'কৌতুক';
 ১৮ অল্পবকোষে আদু - 'কৌতুকঃ স্থানে হর্ষ হ্রাব্রাশ্রে কৃতশ্রমো'
 ১৯ কৌতুক - (কৌব) - [কৃতক + অন] - হ্রুব, কৃতশ্রম, উৎসর্গ,
 ২০ - হর্ষ, আবিহায়া, স্থানল।

কৌতুক অর্থে স্থানল, হর্ষ, কৃতকৃত্তন ইত্যাদি (কোষাণু,
 অকোষ, হ্রুবন্থন ই. অনুষ্ঠান হেতু কোষাণু।

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
									1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31		

Appointment

अपि मूढ! किमस्ति कन्यानाः पुरदुषकेऽपि
 किम् + अस्ति कन्या + अन्तीः पुरदुषके + अपि
 ३२ अर्थात्! किं आहु कन्याव अन्तःपुरदुषके कन्यैव प्रति

कश्चित् कृपावसरः, स्थविहः स राजा
 किराउ कृपाव अरुणम् रूढ ३२ राजा
 - प्रथमतः कृपाव

जश विलुप्तमानावमानचित्तो दुश्चरितदुहितु-
 जश - विलुप्तमान + अवमानचित्तः दुश्चरिता कन्याव
 वाङ्मन्ये ज्ञान - अज्ञान उत शून्य शय

-पक्षपाती यदेव किञ्चित् प्रलपति, त्वयाऽपि
 पक्षपाती - शय य किञ्च प्रलप्ये उक्ते कन्याव त्वया + अपि
 उक्ते ३-

किं तदनुमत्या स्थातव्यम्, अविमम्बितमेव
 तत् + अनुमत्या अविमम्बितम् + एव

किं अत्रोक्तिः अत्र विद्ये वदथ शक्यते? अत्रोक्तिः
 तस्य कामोन्मत्तस्य पितृबंधवार्ता प्रषर्पेन
 काम + उन्मत्तस्य मित्रं वदथ वार्ता प्रषर्पेन
 ३२ काङ्क्षाम्नात्तुव (वाङ्मन्येन)

अवणोत्सवोऽस्माकं विधीयः।

अवण + उत्सवः + अस्माकम्
 अर्थात् अवणोत्सवः आरम्भं विधीयते कन्या (वाङ्मन्ये)।

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30							

(20)

August 2017

11
Friday

Appointment

माच दुर्लुकाया सहानुजेन
आव अर्थ दुर्लुकायाके आव हाटवण 9

कीर्तिधारण निगाडित्तरणा चार्के 10
कीर्तिधारण असे कृष्णल परिवे पाय 11
कारणाने 12

निरोद्ध्या, इति 13

आवक कर

अपत्यावत मर्ण्यारु अर्कच्छेपुव भार्यमे चतुर्वर्गके ज्ञानाल 14
ये वृत्ति कर्यानुःपुव दुष्क कयादु अर्थ्य वाक्यवाशने 15
प्रति करुता प्रदक्षनेव प्रयाजन आवु दि? 16

आव ज्ञाने वि शल, कोन प्रयाजन लेई, 17

वृद्ध वाक्य (झालववाक्य ज्ञानप्रार) वाक्यके उच्यतीत 18

शये ज्ञान-अज्ञान उठान अन्त्य शय्येन एव निजेव 19

दुष्क विद्या कर्याव अर्थि (अवशिष्टानुसरेव) प्रति पक्षपातदुष्क शये 20

या दिहु प्रलया वरुदुन, अज्ञानि ज्ञाने निषे दुष्क 21

चिन्तक) उ कि का अर्थ वदेव शक्येव? अर्थ्य 22
वाक्यवाशने वक्षा कर्याव कसु ज्ञानप्रार उ आव झी 23

निजदो प्रान्त्यकारे लु अर्थिये चतुर्वर्गके 24

আনন্দ উপস্থাপন ২০৮।

(২৬)

থামিয়ে রেখেছিলেন, কিন্তু দর্পস্রাব কামাঙ্কন — 14

অবিলম্বে বাহুবাহনকে বিচিৎরকাম ২৩৩ করা 15

হোক, ~~স্বভাব~~ এক স্বভাব যেরূপে তখন অংকন
যেন দর্পস্রাবকে নিবেদন করা হয়, যার স্বার্থে 16

দর্পস্রাবে করে প্রতি (আনন্দ) কামাঙ্কন, 19

একটি স্বার্থে নিবেদন তিনটি অবস্থানস্বরূপী ও 20

কিন্তু যথোদর দীর্ঘস্রাবকে স্বস্থানিত অবস্থায়

কাহালাবে প্রেরণ করতে নির্দেশ দিলেন।

অর্থাৎ নিবেদন যেরূপে ও কোনকো বন্দী কামাঙ্কন

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30							

तत्राकर्ष्यं प्रातरेव राजभवनद्वारे
 तत् + च + आकर्ष्यं प्रातः + एव

अ च

तत्राकर्ष्यं प्रातरेव राजभवनद्वारे
 तत् + च + आकर्ष्यं प्रातः + एव
 तत्राकर्ष्यं प्रातरेव राजभवनद्वारे
 तत् + च + आकर्ष्यं प्रातः + एव

अर्च

दुरीता कन्यानां पुरदूषकः सन्निधापयितव्यः
 दुरीता कन्यानां पुरदूषकः सन्निधापयितव्यः
 दुरीता कन्यानां पुरदूषकः सन्निधापयितव्यः

चण्डपोतश्च मातङ्गपतिरुपचितकल्पनापपन्नसार्थव
 चण्डपोतः + च मातङ्गपतिः + उपचितकल्पना + उपपन्नः + सार्थ + एव

चण्डपोत (शक्ति) शक्तिराज्ज उच्यते अर्द्धय अर्द्धित प्राज्ञानुभू

समुपस्थापनीयः कृतविवाहकृत्यश्रीत्यापादमेव
 कृतविवाहकृत्यः + च + उच्यते + अपाद + एव
 समुपस्थापनीयः कृतविवाहकृत्यश्रीत्यापादमेव
 कृतविवाहकृत्यः + च + उच्यते + अपाद + एव

तमनार्यशीलं तस्य दस्तिनः कृत्वा क्रीडनकं
 तम् + अनार्यशीलम्
 तमनार्यशीलं तस्य दस्तिनः कृत्वा क्रीडनकं
 तम् + अनार्यशीलम्

नेहकविद्यं रामगहनकं अर्च शक्तिव
 नेहकविद्यं रामगहनकं अर्च शक्तिव
 नेहकविद्यं रामगहनकं अर्च शक्तिव

तदधिरूढ एव गत्वा शत्रुसाहाय्याकाय
 तदधिरूढ एव गत्वा शत्रुसाहाय्याकाय
 तदधिरूढ एव गत्वा शत्रुसाहाय्याकाय

तत् + अधिरूढः तस्य अर्च आशय्युः कृत्य ये इव
 तत् + अधिरूढः तस्य अर्च आशय्युः कृत्य ये इव
 तत् + अधिरूढः तस्य अर्च आशय्युः कृत्य ये इव

प्रत्यासीदता राजन्यकश्च सकौशवादनस्यावः
 प्रत्यासीदता राजन्यकश्च सकौशवादनस्यावः
 प्रत्यासीदता राजन्यकश्च सकौशवादनस्यावः

प्रति + आसीदतः सकौशवादनस्य + अवग्रहणम्
 प्रति + आसीदतः सकौशवादनस्य + अवग्रहणम्
 प्रति + आसीदतः सकौशवादनस्य + अवग्रहणम्

ग्रहणं करिष्यामि इति पार्श्वप्रणय + अवेक्षासक्रे
 ग्रहणं करिष्यामि इति पार्श्वप्रणय + अवेक्षासक्रे
 ग्रहणं करिष्यामि इति पार्श्वप्रणय + अवेक्षासक्रे

करिष्यामि इति पार्श्वप्रणय + अवेक्षासक्रे
 करिष्यामि इति पार्श्वप्रणय + अवेक्षासक्रे
 करिष्यामि इति पार्श्वप्रणय + अवेक्षासक्रे

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
								1	2	3	4	5	6
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31		



Appointment

যেহে কথা সূনে চন্দ্রমা আদেশ দিনেন -

অকালেই প্রায়াদদ্বাবে কন্যাসুপুৰদুৰ্গকবীকি ইয়াইত
 কৰাৰে, যথিবান চন্দ্রমাতকৈও উপুৰু অকুৰু
 অকুৰু কৰে উপায়িত কৰাৰে, বিকাত অনুষ্ঠান
 অক্ষয় কৰে অক্ষয় (চন্দ্রমা) এ বিচচবিত্ত
 বাসকাতকৈ হাতিব খেলনাৰ পৰিণত কৰিব,
 তাৰপৰ এ হস্তিৰ পৃষ্ঠে চেপে গিয়াৰে অক্ষয় সাহায্যৰ
 উন্নয় আগত বাজন্যককৈ বিন 3 বাহন অহ
 বন্ধন কৰিব, এই কথা বনে পাৰ্শ্বচৰাদেৰ দিক
 হুৰ্জিতাত কৰালেন।



Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30							

(27)

August 2017

17
Thursday

Appointment

निचे चासावह न्यस्मिन्नुमिषयेवोषोरागे
 च + असौ + अहनि + अन्यस्मिन् + उन्मिषति + एव + उषोरागे
 नीत शब्द। ए चारु दिन उन्मिषति न अहनि प्रकाम प्राक 100 व

राजापुत्रो राजाङ्गुनं शशिभिः उपतस्थे च
 राज + अङ्गुनम्
 वाङ्मूल (वाङ्मूलक) वाङ्मूलक (म) वाङ्मूलक (म) वाङ्मूलक (म) [उत्तर 2 ल] उद्दिष्ट 2 ल
 उत्तर 2 ल

अहितगण्डस्युपातः, क्षणे च तस्मिन् मुमुचे
 अहितगण्डः + प्रणुपातः
 अहितगण्ड (अहितगण्ड 2 ल) अहितगण्ड (अहितगण्ड 2 ल) अहितगण्ड (अहितगण्ड 2 ल) [अहितगण्ड 2 ल]

मदुद्विप्रुगलं रगतशुद्धामपि।
 मत् + अद्विप्रुगलम्
 (वाङ्मूलक) चानुगलम् वाङ्मूलक (म) वाङ्मूलक (म) [अहितगण्ड 2 ल] अहितगण्ड (अहितगण्ड 2 ल)

काचित्पुशो रूपिणी शूवा प्रदक्षिणीकृत्य
 काचित् + अपुशोरूपिणी
 (कल) अपुशो चानुगलम् वाङ्मूलक (म) वाङ्मूलक (म) चानुगलम् वाङ्मूलक (म) वाङ्मूलक (म)

प्राञ्जलिव्यगिज्ञापत् - देव, दीपतामनुग्रहं चित्तम्
 प्राञ्जलिः + व्यगिज्ञापत् - दीपताम् + अनुग्रह + आर्द्रम्
 दृजावृत्ति 2 ल विद्वान् कल - चानुगलम् वाङ्मूलक (म) वाङ्मूलक (म) चानुगलम् वाङ्मूलक (म) वाङ्मूलक (म)

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
								1	2	3	4	5	
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31		

Appointment

আহম্মি সৌমহিমসাম্ভবা সুরতমসুদী

আহম্ম+আম্মি

আম্মি

২টি

সৌমহিম্মি নামক গার্ভার ^{কন্যা} সুবতমসুদী

নাম সুরসুদী,

নামে দেবকন্যা।

পরের দিন উক্ত বক্তাবর্ণ প্রকাশ পোতবে ~~এ~~ বাসকহনকে
 বাসকহনে উল্লিখিত করা হল। শুক্রবার চটপোতকে ও
 সোমবারে আম্ম ২ল, যার গান্ধুদেখ থেকে স্বাদবীণা
 প্রসূত হইল, যের্থ সুস্থত বাসকহনের দুটি বা থেকে
 বসুতসুদীম সুস্থ হল। যের্থ স্বেচ্ছায় কোন এক
 অস্থায়ী স্থিতি ধরুন করে বাসকহনকে প্রদর্শন করে
 হৃতাশুভলি হয়ে নিবেদন করল — (২ প্রাণে)।
 প্রথম চিত্রে আম্মা কন্যা সুস্থল আম্মি সৌমহিম্মি
 নামক গার্ভার কন্যা সুবতমসুদী নামক দেবকন্যা।

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3	4	5	6	7	8	9
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
25	26	27	28	29	30							

तस्या मे नभसि नानि ननु ब्यमु गच्छक म ह्यो नु बद्ध -
 (आकाश) नानि-ननु-भुय-कलहंस+अनुबद्ध-वक्रोपाः
 अर्थ आकाश (भूतमभूति) आकाश पद्मलाडी एते सूक्त कलहंस आकाश

वक्रोपाश्च निवारणक्षौभविच्छिन्नविगमिता
 - + तत + निवारणक्षौभ
 अथानुपुन अनुपुन करत शक्ये ताक निवारण करते निष्पु चयइत्युक्तम्

द्वार्यद्विर्यद्व्यथा जानु ह्येवते सरसि
 द्वार्यद्विः + यद्व्यथा
 द्वि शय करि शय कवकस्य कदाचि द्विआत्म्य अर्थात् 2

मनुद्वेके मन्मोनाग्रस्य मर्ध्वेर्माकं पृथस्य मस्तके
 मनु + उद्वेके
 अल्पकल्पमिभिष्ये अत्रोत्तर श्रान करु उरि अथय अर्थि शार्कलेपेय इत्युक्तम्

मणिकिरण द्विगुणितपलितमपतत, पालितम्
 मणिकिरण उच्छ्रिताय (केशर अथवा) द्विगुणित द्विगुणित अथ पतित इत्या (अर्थि)

कोपितेन कोऽपि तेन मयि शापः। - पापे शजस्व
 कः + अपि
 त्विनि कुरु शय (कत एक) अत्रिमाथ आमाके दिवत - (2 पारिषि)।

मौदजातिमज्ञात चैतन्यां सती इति।
 मौदजातिम + अज्ञात चैतन्या
 एतन्नामैव ज्ञाने अति शक्ये वदितुं शक्ये।

৩২

August 2017

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
								1	2	3	4	5	
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31		

Appointment

কোন একদিন আকস্মিকভাবে অদ্বৈতবাদী এক বুদ্ধ
 (স্বয়ংক্রিয়) কনহংস আমায় সুখ অনুভব করতে থাকলে
 (স্বয়ং) তাকে নিবারণ করতে গিয়ে চাঞ্চল্যবশতঃ আমায়
 কনহংস দিন হয়ে স্বর্ষি স্বাক্ষেপ-র স্বাক্ষেপ ওপর
 পতিত হন, ^{দৈবকর্মে} স্বর্ষি স্বাক্ষেপ তখন বিজ্ঞানময় অকল্পিত
 অন্ধ জন ~~এ~~ বিস্মিত হবো বলে স্থান করে ওপরে
 উঠেছিলেন, যেই সময় কনহংসে হস্তি স্থানিকিরণে
 উজ্জ্বলতায় স্বর্ষি স্বাক্ষেপে মাথা ~~এ~~ ^{স্বয়ংক্রিয়} বিস্মিত
 কোমর (চুলের) কুণ্ডলা দ্বিগুন বর্ধিত হয়ে পতিত হন।
 তখন যেই স্থান (স্বাক্ষেপ) বৃষ্টি হয়ে আমায় কনহংস
 আকস্মিক দিনে — হে পাশিষ্ঠে, চৈতন্যহীন হয়ে
 মোহে ঝুঁতে পড়িত হও।